Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

वाल्मीकि रामायण में नीतितत्त्व

डा0 प्रभात कुमार (असिस्टेन्ट प्रोफेसर)
संस्कृत–विभाग नेहरू ग्राम भारती डीम्ड विश्वविद्यालय प्रयागराज।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 151-157

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

नीति शब्द 'नी'[1] धातु से "स्त्रियां क्तिन्'[2] सूत्र से भावार्थक क्तिन् प्रत्यय के योग से निष्पन्न है। 'नी' धातु ले जाने या ले चलने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अमरकोष के अनुसार नीति समानार्थक एक 'नय' शब्द भी है, जो 'नी' धातु में अच् प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है। 'नी' धातु में अच् प्रत्यय लगने पर नी के ई को गुण ए तथा ए को अय् आदेश होता है। इस प्रकार न् + अय् + अच्= नय शब्द बनता है। इससे स्पष्ट है कि नीति एवं नय दोनों हो शब्द नी धातु से निष्पन्न है। नीति शब्द के अर्थ वामन शिवराम आप्टे कृत संस्कृत हिन्दी कोष में[3] निर्देशन, मार्गदर्शन, पद्धति, रीति, औचित्य आदि दिये गये हैं। लगभग इन्हीं अर्थों[4] का बोधक 'नय' शब्द भी है। विभिन्न कोषों के अनुसार नीति शब्द के अर्थ नीति, रीति, पद्धति, व्यवस्था, औचित्य आदि ही है।

भारतीय साहित्य में नीति का प्रयोग अत्यन्त प्राचीनकाल से होता चला आ रहा है और समय–समय पर नीति सम्बन्धी अनेक सूक्ति वाक्यों का प्रयोग महापुरुष करते रहे हैं। ये नीति सम्बन्धी वाक्य हर युग में भारतीय काव्य का गौरव वर्धन करते रहे हैं, क्योंकि नीति के प्रयोग से काव्य अधिक मानव हित साधन में समर्थ हो जाता है। वस्तुतः नीति एक ऐसा जीवन मार्ग है जो मानव के हर क्षेत्र के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है। यदि यह कहा जाय कि मानव जीवन का पूर्ण विकास किसी न किसी नीति का ही सुपरिणाम है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। नीति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रस्तुत किये हैं। इस प्रसंग में डॉ० सुखदेव शुक्ल के विचार दर्शनीय हैं–

''प्रत्येक समाज अपने अन्दर शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए एक विशिष्ट प्रकार की आचार पद्धति निर्धारित करता है। इस आचार पद्धति का लक्ष्य यही होता है कि समाज के सामूहिक जीवन को समृद्ध और सुखी बनायें। समूचे समाज द्वारा स्वीकृत यह विशिष्ट आचार धीरे–धीरे एक सुस्पष्ट एक सुनिश्चित व्यवस्था का रूप धारण कर लेता है और समाज के अन्दर रहने वाले सभी व्यक्तियों के आचरण का निर्देशन व

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

नियन्त्रण करने लगती है। यहाँ आकर इस सुनिश्चित एवं व्यवस्थित आधार– पद्धति को नैतिकता की संज्ञा दी जाती है और सामाजिक जीवन में व्यवस्था और शान्ति बनाये रखने वाला आचरण नैतिक कहलाने लगता है। इस प्रकार नैतिकता से अभिप्राय व्यक्ति के आचरण का निर्देशन करने वाली एक विशिष्ट नियम व्यवस्था एवं आचार पद्धति से है जिसे समाज अपने सदस्यों के लिए रचता है''[5] नीति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए ''हिन्दी साहित्य कोष'' में कहा गया है–

''समाज को स्वस्थ एवं संतुलित पथ पर अग्रसर करने एवं व्यक्ति को धर्मार्थ, काम तथा मोक्ष की उचित रीति से प्राप्ति के लिए जिस विधि निषेधमूलक सामाजिक, व्यावहारिक, आचारिक, धार्मिक तथा राजनैतिक आदि नियमों का विधान देशकाल और पात्र के सन्दर्भ में किया जाता है उसे नीति शब्द से अभिहित करते हैं।''[6] इस प्रसंग में महात्मा गाँधी के विचार भी विशेष महत्त्व रखते हैं। वे धर्म और नीति को एक मानते हुए लिखते है कि– ''धर्म ही नीति है और नीति को धर्म के अनुसार होना चाहिए।''[7] डॉ दीनदयाल गुप्त नीति के प्रचलित अर्थ की ओर संकेत करते हुए लिखते है– मनुष्य का वह ज्ञान और अनुभूति का भण्डार जो मानव के व्यावहारिक जीवन को सुखमय और उन्नत बनाने में सहायक होता है, नीति साहित्य है। मनुष्य क्या करता है, इस को छोड़कर मनुष्य को क्या करना चाहिए, नीति है।[8]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि नीति मानव जीवन को सरल, सुखद् मार्ग से ले चलने का ही नाम है। मानव मात्र का लक्ष्य दुःख से निवृत्ति और सुख की प्राप्ति है। इसी के लिए मानव जाति प्राचीन काल से निरन्तर प्रयास करती चली आ रही है। मानव को अपने जीवन पथ से चलते समय अनेक बाधाओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। वस्तुतः इन समस्त जीवन क्षेत्रों को सरलता से पार करके पूर्व सन्तोष एवं सुख की उपलब्धि में ही मानव जीवन की सफलता का रहस्य निगूहित है। इस सफलता की प्राप्ति में सहायक मार्ग ही नीति है। वस्तुतः नीति शब्द का सही अर्थ– ''नीयते अनेन इति नीतिः क्योंकि जिस मार्ग पर चलकर मानव अपना सर्वांगीण विकास करता हुआ अन्य के विकास में भी सहयोग प्रदान करें वही, मार्ग नीति है। यो तो मनीषियों ने मानव जीवन का लक्ष्य स्पष्ट करते हुए लिखा है –

''धर्मार्थकाम मोक्षामां यस्यै कोऽपिन् विद्यते,

अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ।।''

अर्थात् जिसने धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में से किसी एक की भी उपलब्धि नहीं की, तो उसका जन्म बकरी के गले के समान व्यर्थ ही है। कहने का तात्पर्य है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की उपलब्धि कराने वाला जीवन पथ ही नीति है। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि मानव जीवन की सफलता के लिए कुछ नियमों की, कुछ आदर्शों की आवश्यकता तो अवश्य होती है। ऐसे नियम, संयम एवं आदर्शों से युक्त

जीवन पद्धति को ही नीति की संज्ञा दी जा सकती है जिसका अनुकरण करते हुए मानव बहुमुखी विकास की ओर उन्मुख होता हुआ अपने जीवन की सार्थकता सिद्ध कर सकें।

नीति का वर्गीकरण– देशकाल एवं परिस्थिति के अनुसार नीति के भेदों की संख्या अधिक हो सकती है। परन्तु भेद–प्रभेदों को विस्तार न देकर उनकी संख्या को सीमित करना ही अधिक समीचीन होगा। मुख्य रूप से नीति के चार प्रकार ही बताये गये है

(1) लोकनीति (2) राजनीति (3) आर्थिकनीति (4) धार्मिकनीति।

(1) लोकनीति– लोकनीति के अन्तर्गत वैयक्तिक नीति, पारिवारिक नीति एवं सामाजिक नीति को लिया जा सकता है। जैसे– व्यक्ति के कुछ कार्यों का सम्बन्ध स्वयं अपने से ही होता है। उसके वे समस्त कार्य इसी नीति के अन्तर्गत आते हैं। जो व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से अपने को स्वस्थ नहीं रख सकता वह न अपना हित कर सकता है और न किसी अन्य का। अतः शारीरिक एवं मानसिक दष्टि से अपने को स्वस्थ रखना और फिर अपने. समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना लोकनीति का ही विषय है। व्यक्ति के परिवार में माता–पिता, भ्राता, भगिनी, पुत्र, पुत्री आदि अनेक सदस्य होते हैं। समुचित शिक्षा का लाभ उठाते हुए इन सबके प्रति वह समन्वयात्मक व्यवहार करें तभी परिवार का कल्याण हो सकता है। परिवार के बाहर मानव को समाज के अन्य व्यक्तियों से भी सम्पर्क रखना पड़ता है। उन सबके प्रति भी इसके कर्तव्य हैं, किन परिस्थितियों में किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? यह लोकनीति का विषय है। हमारा जीवन ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास चार आश्रमों में विभक्त है। इन आश्रमों की सफलता का रहस्य क्या है? वर्ण व्यवस्था के अनुसार हमारे क्या कर्त्तव्य है? इन सबको उत्तर लोकनीति देती हैं। वस्तुतः लोकनीति का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। व्यक्ति की शिक्षा–दीक्षा परिवार एवं समाज में अन्य लोगों के साथ उसका व्यवहार अन्य की हानि न करते हुए अपना लाभ, व्यष्टि के साथ समष्टि के विकास का चिन्तन आदि विषय इसी नीति के अन्तर्गत लिये जा सकते है। इसलिए भगवान् श्रीराम राजा होकर भी दूसरा विवाह नहीं करते है और सीता जी की स्वर्णमयी प्रतिमा तैयार करते है –

कांचनी मय पत्नी च दीक्षायां नाश्च कर्मणि।

अग्रतो भरतः कृत्वा गच्छत्वग्र महायशाः ।।[9]

लोकनीति में व्यक्ति के वे समस्त क्रिया कलाप आ सकते हैं जिनसे उसका, उसके परिवार का एवं उसके समाज का सम्बन्ध हो। वस्तुतः मानव का मानव के साथ व्यवहार एक दूसरे के प्रति सहानुभूति के भाव, परस्पर त्याग, प्रेम आदि इसी नीति के अन्तर्गत आती है।

(2) राजनीति– किसी भी समाज में अनुशासन स्थापित करने के लिए राज्य की आवश्यकता होती है। उस राज्य का एक प्रमुख शासक और अनेक सहायक होते हैं। वे सब मिलकर जिस ढंग से समस्त राज्य का

संचालन करते है उसी को राजनीति कहा जा सकता है। राजनीति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– राज+नीति। जिसका अर्थ है राजा की नीति अथवा राज्य की नीति। इस प्रकार राजनीति से तात्पर्य– उस नीति से है जिस नीति के आधार पर कोई राजा अपना राज्य संचालन करता है।

मनु, शुक्राचार्य, चाणक्य आदि नीतिज्ञ विद्वानों ने बड़े विस्तार से राजनीति का वर्णन किया है। प्राचीन काल में राजा की आज्ञा सर्वोपरि मानी जाती थी। वह अपनी सहायता के लिए अन्य योग्य मन्त्रियों की नियुक्ति भी करता था। यह राजा और उसके द्वारा नियुक्त मन्त्रीगण ही अन्य अधिकारियों की सहायता से समस्त राज्य में व्यवस्था बनाये रखते थे। परन्तु आज के युग में राजतन्त्र की प्रथा समाप्त हो चुकी है और सर्वत्र ही प्रजातन्त्र शासन है जहाँ शासन पर किसी एक व्यक्ति का पूर्णाधिकार नहीं होता अपितु प्रजा के अनेक प्रतिनिधि मिलकर ही राज्य की सुरक्षा का भार ग्रहण करते है। ऐसे युग में राजनीति की आवश्यकता और बढ़ जाती है। एक राज्य का दूसरे राज्य के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए? इसका ज्ञान राजनीति के बिना कैसे हो सकती है? प्रतिद्वन्द्विता के इस युग में किसी उचित राजनीति का अवलम्बन ग्रहण किये बिना कोई राज्य अधिक स्थाई नहीं हो सकता। वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि नये राजा की नियुक्ति में सामन्तों की भी सहमती ली जाती थी–

नानानगरवास्तव्यान् पृथग्जानपदानपि ।
समानिनाय मेदिन्यां प्रधानान् पृथिवीपतीः ।[10]

राजनीति शासन की धुरी ग्रहण करने वाले व्यक्तियों को सही दिशा– निर्देश करती हुयी प्रजाहित के ध्यान के लिए नियम एवं विधानों की व्यवस्था करना उसका प्रमुख कार्य होता था। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि प्रजा के कल्याण के लिए जो शासन एक पद्धति विशेष को स्वीकार करता है, वही राजनीति है।

(3) आर्थिक नीति– राजनीति के समान मानव जीवन में आर्थिक नीति का भी बहुत महत्त्व है। जीवन निर्वाह के लिए धन एक अनिवार्य साधन है। अर्थ के बिना मानव अपने जीवन में सफल नहीं हो सकता। अतः धनार्जन के उपाय, जीवन में उसका सदुपयोग, आर्थिक नीति के विषय है। इस आर्थिक नीति का सम्बन्ध व्यक्ति, परिवार व समाज एवं राज्य सबसे ही होता है। अर्थ के बिना कोई भी राज्य अपनी प्रजा के विकास में सफल नहीं हो सकता। हमारे शास्त्रों में भी अर्थ को प्रमुख स्थान दिया गया है। धनार्जन के समय औचित्य एवं अनौचित्य का ध्यान रखना एवं उसके व्यय और वितरण के समय भी औचित्य को न भूलना आर्थिक नीति का ही विषय है। अर्थ के अभाव में व्यक्ति उन्नति कर ही नहीं सकता परन्तु अतिरेक से भी अनेक दोषों का केन्द्र बन जाता है। जीवन में अर्थ के सन्तुलन की भी परम आवश्यकता है। इसका बोध अर्थनीति ही कराती है।

हमारे शास्त्रों में अर्थ को दूसरे सोपान पर रखा गया है। वाल्मीकि रामायण भी अर्थ संग्रह का पूर्ण समर्थन किया है।

धर्मार्थ काममोक्षषु यसयैकोऽपि न विद्यते।

अजामलसतनस्तेव तस्य जन्म निरर्थकम।।[11]

कोशसंग्रहणे युक्ता बलस्य च परिग्रहे।

अहितं चापि पुरुषं हिंस्युरविदूषकत्।।[12]

इससे यह ध्वनित होता है कि राजा का ध्यान धन–संग्रह की ओर था और इस विषय में वह असावधान नहीं था। इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि ने अर्थ–संग्रह के सत्साधनों का अनेकशः उल्लेख किया है।

(4) धार्मिक नीति– धार्मिक महात्माओं ने मानव कल्याण के लिए ही समाज को धर्म की व्यवस्था दी है। वस्तुतः धर्म स्वतः ही एक नीति विशेष का प्रतीक है। परन्तु उसका सम्बन्ध व्यवहार की अपेक्षा उस भावना से अधिक है जिसके द्वारा मानव स्वार्थ की संकीर्ण परिधि से ऊपर उठकर मानव के हित को अपना लक्ष्य बनाकर परम तत्त्व के साथ एकाकार हो जाता है। इस भावना के जागृत होते ही मनुष्य में प्रेम, दया, करुणा, त्याग, असत्य, अन्याय, घृणा, विद्वेष की आसुरी वृत्तियों समाप्त हो जाती हैं। इस प्रकार धर्म मानव को मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रेरित करती है। धार्मिक नीति से तात्पर्य ऐसी ही धार्मिक भावनाओं से है जो मानव हृदय में सात्विक वृत्तियों को जागृत कर उसे मानव हित साधन के लिए प्रेरित करती है। उसे कर्तव्य, अकर्तव्य का सही ज्ञान कराती है। यह धार्मिक नीति ही व्यक्ति के हृदय को निष्कलुष एवं पवित्र करती है, जिससे वह स्वार्थपूर्ण संघर्ष का त्याग कर प्राणीमात्र को अपना ही स्वरूप समझता हुआ सबके हित चिन्तन में लग जाता है। यह धार्मिक नीति ही मानव को दीनों की सेवा, प्राणी मात्र से प्रेम, सबके साथ समान व्यवहार आदि सद्गुणों की ओर प्रेरित करती है। अतः मानव कल्याण के लिए यह एक अनिवार्य साधन है। धर्म की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए राक्षस कुम्भक ने भी कहा था कि धर्म, अर्थ और काम इन तीनों में 'धर्म' श्रेष्ठ है। अतः विशेष अवसरों पर अर्थ और काम की उपेक्षा करके भी धर्म का सेवन करना चाहिए–

त्रिषु चैतेषु यच्छेष्ठं श्रुत्वातन्नाबुध्यते।

राजा वा राजमात्रो वा व्यथ्र तस्य बहुश्रुतम् ।।[13]

कुम्भक का यह कथन यह सिद्ध करता है कि घोर अनर्थकारी राक्षस भी धर्म की महत्ता से अपरिचित नहीं थे। इस प्रकार राक्षसों को भी धर्म से परिचित प्रदर्शित करते हुए महर्षि वाल्मीकि ने धर्म की महत्ता का उद्घोष किया है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नीति शब्द 'नी' धातु से क्तिन् प्रत्यय के संयोग से सम्पन्न है जिसका अर्थ है– ऐसा मार्ग, रीति या प्रणाली जिसके आश्रय से मानव अपना और अपने समाज का

बहमुखी विकास करने में समर्थ हो सके। मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार नीति के भी अनेक प्रकार हो सकते है, परन्तु इस समस्त नीति भेदों का समावेश केवल चार प्रकार की नीतियों में किया जा सकता है– वे चार प्रकार की नीतियाँ– लोकनीति, राजनीति, आर्थिक नीति एवं धार्मिक नीति। लोक नीति में मानव के व्यक्तिगत हित का ध्यान रखते हुए मानव, परिवार समाज एवं विश्व का हित साधन करने में किस प्रकार समर्थ हो सकता है। उसका अपने परिवार के सदस्यों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए? समाज में सबके साथ वह वैसा व्यवहार करें आदि बातें लोकनीति के अन्तर्गत आती है। राजनीति में राज्य की व्यवस्था एवं संचालन के ढंग को लिया जा सकता है। आर्थिक नीति में धनार्जन उसका संग्रह एवं उसके सदुपयोग को लिया जा सकता है। धनार्जन से सत्साधन और मानव धर्म को लिया जा सकता है। मानव धर्म का उद्देश्य मनुष्य मात्र का मार्ग निर्देशन करते हुए उसका कल्याण करना है और नीति का भी यही उद्देश्य है। इस प्रकार उपर्युक्त चार प्रकार की नीतियाँ समस्त मानव जीवन को समेटे हुए हैं और इन चार नीतियों के ज्ञान एवं परिपालन से मानव अपने और पर के हित साधन में समर्थ हो सकता है।

सची

1. भट्टोजिदीक्षित, सिद्धान्त कौमुदी, णीअ् प्रापणे।
2. पाणिनि अष्टाध्यायी, 3.3.94 भावे स्त्रियां क्तिन्।
3. वामन शिवराम आप्टे, पृ0 555
4. वहीं, पृ0 511
5. हिन्दी उपन्यास का विकास और नैतिकता– डॉ० सुखदेव शुक्ल, पृ0 31
6. हिन्दी साहित्य कोष, सम्पादक डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृ0 20
7. गाँधी साहित्य, धर्मनीति, पृ० 3 व 4
8. श्री चन्द्रभान गुप्त, अभिनन्दनग्रन्थ, हिन्दी साहित्य के मध्य युग का नीति और विवेक परक काव्य– डॉ० दीन दयाल गुप्त, पृ0 320
9. वाल्मीकि रामायण, उत्तर काण्ड, 91/25
10. वाल्मीकि रामायण– अयोध्या काण्ड, 1/46
11. चाणक्य नीति दर्पण–13वाँ अध्याय श्लोक 10
12. वाल्मीकि रामायण–बालकाण्ड–7/11
13. वाल्मीकि रामायण– युद्धकाण्ड–6/ध10